9

''वे नौ कहां हैं?''

(लूका 17:11-19)

हमारे समय की सबसे बड़ी आवश्यकता धन्यवाद करना है। हमें असंख्य आशिषें मिली हैं, परन्तु हम उनके प्रति लापरवाह रहते हैं। पौलुस ने लिखा है, ''क्योंकि परमेश्वर की सृजी हुई हर एक वस्तु अच्छी है: और कोई वस्तु अस्वीकार करने के योग्य नहीं; *पर यह कि धन्यवाद के साथ खाई जाए*'' (1 तीमुथियुस 4:4)। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक कहता है, ''इस कारण हम इस राज्य को पाकर जो हिलने का नहीं, उस *अनुग्रह को हाथ से न जाने दें,* जिसके द्वारा हम भक्ति, और भय सहित, परमेश्वर की ऐसी आराधना कर सकते हैं जिससे वह प्रसन्न होता है'' (इब्रानियों 12:28)। कुलुस्सियों 2:7 के अनुसार हमें ''अधिकाधिक धन्यवाद'' करना चाहिए। साफ़ कहें तो यह पाठ मन को सिखाने के लिए उतना नहीं, जितना दिल दहलाने और विवेक को भेदने वाला है (2 पतरस 1:12, 13)।

यीशु के समय में कृतघ्नता

लूका 17 कहता है कि ''वह यरूशलेम को जाते हुए सामरिया और गलील के बीच से होकर जा रहा था'' (आयत 11)। यह तीसरी बार है, जब लूका की पुस्तक में कहा गया कि यीशु ''यरूशलेम को जा रहा था।''[1] क्रूस दिए जाने का समय निकट आ रहा था। ''... तब वह सामरिया और गलील के बीच से होकर'' गया (आयत 11)। NIV बाइबल के अनुवाद में है, ''यीशु सामरिया और गलील की सीमा के साथ-साथ गया।'' यीशु पश्चिम की ओर यरदन नदी की ओर जा रहा होगा। ''और ... वह किसी गांव में चला गया'' (आयत 12)। लूका ने उस गांव का नाम नहीं बताया, क्योंकि इसकी इतनी आवश्यकता नहीं थी।

उस गांव में जाने पर यीशु को ''दस कोढ़ी मिले, जो दूर खड़े थे'' (आयत 12)। कोढ़ी नगर में या गांव में प्रवेश नहीं कर सकते थे; परन्तु वे भीख मांगने के लिए नगर के फाटक तक आ सकते थे।[2] ये कोढ़ी यीशु के गांव में प्रवेश करते समय गांव की सीमा के निकट ही होंगे। उनमें से कम से कम एक जन सामरी था (आयत 16)। इसके बाद की आयतों से स्पष्ट होता है कि शेष में से अधिकतर या सभी यहूदी थे (आयत 18)। हालात ने उन कट्टर शत्रुओं[3] अर्थात यहूदियों और सामरियों को मिला दिया था। जैसे बाढ़ का पानी चढ़ आने पर बाघ और भेड़ें सब सूखे द्वीप पर एक साथ इकट्ठे हो जाते हैं।

कहानी को पूरी तरह समझने के लिए हमें इन दस आदमियों के रोग के बारे में जानकारी होना आवश्यक है। यह रोग जिसे बाइबल में कोढ़ कहा गया है, एक भयानक छूत[4] का रोग था। इस रोग का अध्ययन करने वाले बताते हैं कि कोढ़ के रोग का दृश्य बड़ा घृणित होता है। पहले तो इस रोग से चमड़ी का रंग बदलता है यानी वह गुलाबी रंग की; फिर भूरे रंग की और फिर काली पड़ जाती

है। उस पर छाले हो जाते हैं; जो घाव बन जाते हैं! रोग से चमड़ी ही नहीं, बल्कि हड्डियां भी गलने लगती हैं, दो सालों में ही इस रोग से पीड़ित व्यक्ति की मृत्यु हो ही जाती थी।

मन में टुंडे हाथों और टुंडी भुजाओं वाले दस निकाले हुए व्यक्तियों की कल्पना करें। किसी का आंख, कान या नाक नहीं होगा। ये गन्दे मैले-कुचैले, परेशान ठुकराए हुए लोग थे, जिनका कोई घर-घाट नहीं था और न कोई जीविका या अन्य लोगों की तरह कोई सामान्य जीवन। कोढ़ को क्षमा करने वाला और कमज़ोर करने वाला और घृणात्मक माना जाता था।

आयत 12 में कहा गया है कि ''वे दूर खड़े रहे।'' रीति के अनुसार कोढ़ियों को दूर खड़े रहना पड़ता था। कितने दूर, यह नहीं बताया गया था, परन्तु एक रब्बी की सिफारिश पर पचास गज दूर रहते थे; जो कि फुटबाल के मैदान[5] के आधे भाग जितना बनता है!

यीशु को देखकर इन दस कोढ़ियों ने ''ऊंची आवाज़ देकर कहा'' (आयत 13)। बीमारी से उनकी आवाज़ भी बदल गई थी। आम तौर पर इस रोग से टीबी हो जाती थी। रोगी की आवाज़ खुरदरी और कर्कश हो जाती। ये दसों, पचास गज दूर खड़े होकर अपनी खराब आवाज़ में शोर मचाते हुए यीशु का ध्यान अपनी ओर खींचने का प्रयास कर रहे थे। उन्होंने पुकारा, ''हे यीशु, हे स्वामी, हम पर दया कर'' (आयत 13)। वे ठीक होना चाहते थे परन्तु विशेष तौर पर उनकी इच्छा, दया, तरस और उनको समझने की थी। उन्हें शारीरिक चंगाई ही नहीं, मन और आत्मा की चंगाई भी चाहिए थी।

आयत 14 में कहा गया है, ''*उसने उन्हें देखकर* कहा, जाओ ...।'' शायद यीशु के इर्द-गिर्द भीड़ का शोर था। शायद पहले उनको आवाज़ सुनाई थी। अंतत: जब उसे उनकी आवाज़ सुनाई दी तो उसने उनकी ओर देखा, जो दूर खड़े थे। उन्होंने उसे कहा, ''जाओ और अपने तईं याजकों को दिखाओ'' (आयत 14)।

पहले यीशु ने कोढ़ी को चंगा किया था। उस समय यीशु ने उसे छू कर कहा ''शुद्ध हो जा'' (लूका 5:13)। उस व्यक्ति के चंगा होने के बाद यीशु ने उसे व्यवस्था की आज्ञानुसार ''याजक'' को दिखाने के लिए जाने को कहा। याजकों का एक काम स्वास्थ्य अधिकारी का भी था।[6] यदि याजक कह दे कि उसका कोढ़ ठीक हो गया है तो वह मनुष्य कुछ ठहराई हुई बलियां चढ़ाकर समाज में वापस आ सकता था। वह अपने घर वापस जा सकता था, काम पर जा सकता था, मन्दिर में जा सकता था।

परन्तु इस बार प्रभु ने इन कोढ़ियों को छूकर चंगा नहीं किया,[7] बल्कि उसने उनके विश्वास की परख करते हुए चुनौती दी।[8] जाकर अपने आप को याजकों को दिखाने के लिए जैसे कि वे पहले ही ठीक हो चुके हों! (यदि इस कहानी की स्थिति के बारे में NIV बाइबल सही है तो यरूशलेम जाने के लिए दस कोढ़ियों को काफी दूर जाना पड़ना था!)

कहानी का अगला भाग रोमांचित करने वाला है: ''और जाते ही जाते वे शुद्ध हो गए'' (आयत 14)। क्योंकि सामरी ही वापस आ पाया और यीशु से मिला, इसलिए मेरा मानना है कि वे अभी अधिक दूर नहीं गए होंगे कि उनका रोग जाता रहा। जब उनकी आंखें, कान और गले अच्छे हो गए! जब सूखी पपड़ियां उतर गईं और त्वचा बिल्कुल नई हो गई; नई हड्डियां बन गईं; नई मांसपेशियां और नई नाड़ियां ढक गईं; जब उनके शरीर पहले जैसे स्वस्थ और बलवान हो गए! उनके मनों में कैसा रोमांच भर गया होगा! ''मैं फिर से ठीक हो गया!''; ''मैं फिर घर वापस

जा सकता हूं!''; ''मैं समाज में वापस जा सकता हूं!''; ''मैं मन्दिर में भी जा सकता हूं!''

इन दस लोगों में पाई जाने वाली समानताओं पर ध्यान दें: (1) सब को एक भयानक रोग था। (2) सबने उस रोग को दूर करने के बारे में कुछ सोचा था। (3) सबका विश्वास था कि यीशु उनकी इस सम्बन्ध में सहायता कर सकता है। (4) सब ने प्रभु यीशु ने विनती की। (5) सभी ने यीशु की आज्ञा मानी और अपने आप को याजकों को दिखाने के लिए चल पड़े। (6) सभी ठीक हो गए थे। समानता यहीं खत्म नहीं हुई। आयत 15 का आरम्भ ''तब उन में से एक'' से होता है। जल्द ही हमें पता चल जाएगा कि वह आदमी सामरी था। ''उन में से एक यह देखकर कि मैं चंगा हो गया हूं, ... लौटा'' (आयत 15)। कोई संदेह नहीं कि बाद में उसने यीशु की बात मान कर याजक को दिखाया होगा।[9] परन्तु पहले वह धन्यवाद देना चाहता था।

वह ''ऊंचे शब्द से परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ लौटा'' (आयत 15)। उसे समझ आ गया कि परमेश्वर ने यीशु को चंगाई देने की सामर्थ दी थी। उसने कोढ़ी वाली खुरदरी आवाज़ में नहीं, बल्कि चंगाई पाए हुए आदमी की तरह ऊंचे स्वर में ''बड़ी आवाज़ से'' (आयत 15) परमेश्वर की बड़ाई की ''और मुंह के बल [यीशु के] कदमों में गिरकर उसका धन्यवाद किया'' (आयत 16)। उसने पहचान लिया कि यीशु परमेश्वर है और उसके कदमों में गिरकर उसे दण्डवत किया और उसका धन्यवाद किया। ''धन्यवाद किया'' वर्तमानकाल में है, जिससे यह संकेत मिलता है कि चंगाई पाने वाला मनुष्य यीशु का धन्यवाद *करता रहा*।

अगला संक्षिप्त वाक्य एक झटके की तरह लगता है: ''वह सामरी था'' (आयत 16)। सामान्यतया हमारी प्रशंसा वही लोग करते हैं, जिनसे हमें न के बराबर उम्मीद होती है; और जिनसे उम्मीद होती है कि वे धन्यवाद करेंगे, वही परवाह नहीं करते हैं।

आयत 17 में आपको प्रभु यीशु की आवाज़ में उदासी सुनाई देती है? इस पर यीशु ने कहा, ''क्या दसों शुद्ध न हुए? तो फिर वे नौ कहां हैं?'' उम्मीद की जा सकती थी कि वे सब इकट्ठे होकर भजन 103 गाते हुए आते:

> हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह;
> और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!
> हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह,
> और उसके किसी उपकार को न भूलना।
> वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता,
> और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,
> वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, ...
> जिस से तेरी जवानी उकाब की नाईं नई हो जाती है (आयतें 1-5)।

परन्तु उन्होंने नहीं गाया। क्यों? बर्टन कॉफ़मैन ने दांतों तले जीभ दबाने वाले ये सुझाव दिए हैं:

> एक यह देखने की प्रतीक्षा करने लगा कि क्या वह सचमुच ठीक हो गया है।
> एक यह देखने की प्रतीक्षा करने लगा कि वह कब तक ठीक रहेगा।
> एक ने कहा, वह यीशु से बाद में मिल लेगा।

एक ने सोचा कि उसे कभी कोढ़ हुआ ही नहीं था।
एक ने कहा कि वह खुद ही ठीक हो गया है।
एक ने याजक को महिमा दी।
एक ने कहा, ''हां, यीशु ने तो कुछ नहीं किया।''
एक ने कहा, ''यह तो कोई भी रब्बी कर सकता था।''
एक ने कहा, ''मैं तो पहले ही काफी ठीक महसूस कर रहा था।''[10]

फिर यीशु ने उदास होकर कहा, ''इस परदेशी को छोड़ कोई और न निकला, जो परमेश्वर की बड़ाई करता?'' (आयत 18)। अनुवादित शब्द ''परदेशी'' वही शब्द है जो अन्यजातियों के आंगन में और स्त्रियों के आंगन में जाने वाले प्रवेश द्वार पर लिखा मिलता था: ''किसी अन्यजाति का कोई व्यक्ति सीमा और मन्दिर के चारों ओर बनी चारदीवारी में प्रवेश न करे। पकड़े जाने पर अपनी मौत का ज़िम्मेदार वह स्वयं होगा।'' यह आदमी मन्दिर में नहीं जा सकता था, पर वह यीशु के पास आ सकता था।

यीशु अपने पैरों में दण्डवत के लिए झुके सामरी की ओर मुड़ा। ''उस ने उससे कहा; उठकर चला जा; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है'' (आयत 19)। ''तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है,'' कहने का यीशु का स्पष्ट अर्थ होगा। परन्तु शायद यीशु उस मनुष्य को धन्यवाद करने के कारण विशेष आशीष दे रहा था। आखिर धन्यवाद न करने वाले नौ यहूदी भी तो पूरी तरह चंगे हो गए थे। मूल भाषा में इस आयत को इस प्रकार पढ़ा जाता है, ''तेरे विश्वास ने तुझे *बचा लिया* है।''[11] शायद यीशु कह रहा था कि तेरे विश्वास ने और धन्यवाद दिखाने ने[12] तुझे शारीरिक और आत्मिक दोनों से चंगाा किया है। दूसरे शब्दों में ''आज [तेरे] घर में उद्धार आया है'' (लूका 19:9)!

हमारे समय की कृतघ्नता

हम एक ओर खड़े होकर कहानी के आंकड़ों को देखते हैं। 10 में से केवल 1 आदमी यीशु को धन्यवाद देने के लिए वापस आया, जो 10 प्रतिशत बनता है! और हम दंग रह जाते हैं। फिर एक बार सोचते हैं कि क्या इस प्रतिशत में सुधार हुआ है?

हम सबको पता है कि परिस्थिति क्या है, परन्तु इस जानकारी से हमारे जीवनों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा? कई वर्ष पहले एक पुस्तक में मैंने ''थैंकलेसनस'' शीर्षक से एक पूरे पृष्ठ का उदाहरण देखा था। उस पृष्ठ पर मनुष्य के आकार की एक मूर्ति छपी थी, जिस पर चिपका हुआ था ''थैंकलेसनस।'' उस चित्र के चारों ओर मूर्ति की ओर पत्थर फैंकते लोगों की भीड़ है। जब मैंने पास जाकर देखा तो पता चला कि भीड़ में हर किसी के हाथ में एक छोटी सी मूर्ति है, जिस पर ''थैंकलेसनस'' लिखा हुआ है। इस प्रकार व्यंग्य चित्रकार ने अपने इस विश्वास को प्रकट किया है कि हम दूसरों की कृतघ्नता देखकर शोर मचाते हैं, परन्तु हम में से हर किसी के मन में यह कपट कहीं न कहीं अवश्य है। दस में से उस एक की कहानी पढ़कर जो धन्यवाद करने के लिए यीशु के पास लौटा था। हमें अपने आप से पूछना चाहिए कि ''मेरे धन्यवाद का भागफल क्या है?''

धन्यवादी होने के बारे में बाइबल इस प्रकार बल देती है:

और मसीह की शान्ति जिस के लिए तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे, और तुम धन्यवादी बने रहो (कुलुस्सियों 3:15)।

प्रार्थना में लगे रहो, और धन्यवाद के साथ उस में जागृत रहो (कुलुस्सियों 4:2)।

हर बात में धन्यवाद करो: क्योंकि तुम्हारे लिए मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है (1 थिस्सलुनीकियों 5:18)।

''*हर बात में* धन्यवाद करते रहो,'' शब्दों में कितनी बड़ी चुनौती है! धन्यवाद करने के लिए कुछ न कुछ मिल ही जाता है। एक आदमी की कहानी है, जो परमेश्वर का धन्यवाद करने का कोई न कोई बहाना ढूंढ़ ही लेता था। सर्दियों में एक दिन भयनाक तूफ़ान आ गया। हर ओर बर्फ, कोहरा और धुन्ध थी। बिजली गुल हो गई और सब कुछ थम सा गया। इस आदमी समेत बहुत कम लोग थे, जो निरन्तर प्रार्थना करने के लिए इकट्ठे हो सकें। उस सभा में उपस्थित कुछ लोग इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह इसमें कौन-सी भलाई ढूंढ़ेगा और परमेश्वर की महिमा और धन्यवाद करेगा। जब प्रार्थना करने की उसकी बारी आई तो उसने कहा, ''हे प्रभु हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि यह मौसम हमेशा ऐसा नहीं होता।''

हम में से अधिकतर को इस प्रकार की परिस्थिति में से अच्छाई ढूंढ़ने की आवश्यकता है। धन्यवाद करने का दिन था। पूरा परिवार चिड़चिड़े स्वभाव वाले अंकल मौरट सहित इकट्ठा हुआ था। खाने से पूर्व यह बताने के लिए कि वे किस बात के लिए धन्यवादित हैं, सब मेज़ के इर्द- गिर्द इकट्ठे हुए। जब मौरट की बारी आई तो उसने ''आगे वाले'' को कह दिया। अगली सीट पर बैठे बच्चे ने कहा, ''रुको, अंकल मौरट आप को बताना ही होगा कि आप किसके लिए धन्यवाद करना चाहते हो।'' अंकल मौरट ने गला साफ करते हुए कहा, ''ऐसी कोई बात नहीं है, जिसके लिए मैं धन्यवाद दे सकूं।'' लड़के ने मेज़ पर पड़े रोस्टड बर्ड की ओर देखते हुए कहा, ''कम से कम इसके लिए तो धन्यवाद कर सकते हो कि आप टर्की नहीं हो! [अमेरिका में देश भर में नवम्बर के चौथे गुरुवार परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए थैंक्सगिविंग डे मनाया जाता है जिसमें टर्की हेन लगभग हर घर में बनाई जाती है-अनुवादक।]''

धन्यवाद के दिन एक छोटा लड़का जिसने ऐनक लगानी थी, कहने लगा, ''मैं इस ऐनक के लिए धन्यवाद करता हूं।'' किसी ने उससे पूछा, ''क्योंकि इससे तुम्हें देखने में सहायता मिलती है?'' उसने उत्तर दिया, ''नहीं, इसलिए क्योंकि इसके लगाने से लड़के मुझसे शरारत नहीं करते और लड़कियां मुझे चूमती नहीं हैं।''''*हर बात में* धन्यवाद करते रहो।'' धन्यवाद करने के लिए हमारे पास कुछ न कुछ होता ही है!

बाइबल हमें धन्यवाद न करने के पाप के बारे में बताती है। अपने समय के लोगों की बुरी स्थिति के बारे में कहते हुए पौलुस लिखता है: ''इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और *धन्यवाद न किया*'' (रोमियों 1:21)। अपने बाद के समय के लोगों को बुरी स्थिति के बारे में लिखते हुए उसने कहा, ''क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालने वाले, *कृतघ्न,* ...'' होंगे (2 तीमुथियुस 3:2)।

एक प्राचीन दंतकथा के अनुसार दो स्वर्गदूतों को पृथ्वी पर लोगों की प्रार्थनाओं को एकत्र

करने के लिए भेजा गया। एक का काम लोगों की प्रार्थनाओं का टोकरा भरना था कि लोगों ने क्या-क्या मांगा है। दूसरे ने धन्यवाद की प्रार्थनाएं इकट्ठी करनी थीं। कुछ देर बाद दोनों परमेश्वर के सिंहासन के सामने आकर खड़े हुए। पहले वाले के पास लोगों की विनतियों का बेकाबू होता ढेर था, जबकि दूसरा दु:खी और भारी मन से लौट आया; उसका टोकरा लगभग खाली था।

मनुष्यों और परमेश्वर के प्रति कृतघ्नता की कई और कहानियां हो सकती हैं। कुछ साल पहले मिशिगन की झील के किनारे पर्यटकों से भरा एक स्टीमर टूट गया। एडवर्ड स्पेंसर नामक एक विद्यार्थी वहां खड़ा था। किनारे से उसने टूटे हुए ढांचे पर लटकी एक स्त्री को देखा। अपना कोट फैंककर तेज़ लहरों में से तैर कर उस स्त्री को वह किनारे पर ले आया। उस साहसी नौजवान ने सोलह बार उन लहरों का सामना करके सत्रह लोगों की जान बचाई। अंतत: थकावट के कारण वह अचेत होकर गिर पड़ा। उस दुर्घटना के बाद वह शारीरिक रूप से सदा के लिए अपाहिज हो गया। कुछ साल बाद उसकी मृत्यु के समाचार के साथ लिखा हुआ था कि उसे उन सत्रह में से एक ने भी आकर कभी धन्यवाद नहीं कहा था।

परन्तु दूसरों का न्याय करना हमारा काम नहीं है। हम अपनी बात कर रहे हैं। क्या हम उतने धन्यवादी हैं, जितना हमें होना चाहिए? आइए कुछ समय निकालकर अपने अन्दर झांकें।

क्या हम अपने घरों में वैसे ही धन्यवादी होते हैं जैसा हमें होना चाहिए? यह संयोग ही नहीं है कि 2 तीमुथियुस 3 में मनुष्यजाति के पापों की सूची में, ''माता-पिता की अवज्ञा'' के तुरन्त बाद ''कृतघ्न'' शब्द जोड़ा गया है? मुझे नहीं पता कि इसमें कोई संयोग है कि नहीं, परन्तु इतना अवश्य है कि हमारे बीच बहुत से लोग अपने माता-पिता के धन्यवादी हैं। हमारे जीवन में यदि किसी समय वे हमारी देखभाल न करते तो एक सप्ताह की उनकी अनदेखी से हमारी मृत्यु हो सकती थी। बचपन में हम हर बात के लिए उन पर निर्भर थे। अक्सर ऐसा समय आता है जब बुज़ुर्ग माता-पिता अपने बच्चों पर बोझ बन जाते हैं और युवा उनका कर्ज़ चुकाने को तैयार नहीं होते। जैसे शेक्सपीयर के किंग लियर ने अपने बुरे दिनों में कहा था, ''सांप के दांत से कृतघ्न बच्चे का दांत कितना तेज़ है।''

क्या हम अपने साथियों के प्रति उतने कृतज्ञ होते हैं, जितना हमें होना चाहिए? अपने साथियों के प्रति कृतघ्नता पर विचार करने पर बाइबल में से कई उदाहरण ध्यान में आते हैं: लाबान, जिसने अपने दामाद याकूब की कोशिशों के लिए उसका धन्यवाद नहीं किया (तुलना करें उत्पत्ति 31:6, 7); बंदीगृह में यूसुफ को भूल जाने वाला उसका प्याऊ/साकी (उत्पत्ति 40:23); मूसा को पत्थर मारने को तैयार इस्राएली, जिन्हें उसने स्वतन्त्र कराया था (निर्गमन 17:1-4); और शाऊल, जिसका प्राण दाऊद ने बख्श दिया था, परन्तु वह इस जवान को मारने पर उतारू था (2 शमूएल 16:1, 2)।

हम सब किसी न किसी के कर्ज़दार हैं। वे हमारे मित्र भी हो सकते हैं। मसीह में भाई-बहनें या वचन सिखाने वाले भी हो सकते हैं। हम में से कई लोग डॉक्टरों के कर्ज़दार हो सकते हैं, जिन्होंने हमारे प्राण बचाए। क्या हमने उन्हें ''धन्यवाद'' कहा है? इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, आइए हम एक-दूसरे का धन्यवाद करें!

धन्यवादी होने पर बात करते हुए एक प्रचारक ने एक बार कहा था, ''स्वर्ग में कोई टेलीफोन नहीं होता।'' (शायद यही बात मुझे वहां जाने के लिए प्रेरित करती है।) उसके कहने का अर्थ था

कि सब कुछ खत्म होने के बाद ''धन्यवाद'' कहने के लिए बहुत देर हो चुकी होगी। आइए यह मान लेते हैं कि बिल नाम के मेरे एक मित्र ने एक बार मेरा बहुत बड़ा काम किया, लेकिन मैं उसका सही ढंग से धन्यवाद भी नहीं कर पाया। उसके मरने के बाद मैं टेलीफोन उठाकर यह नहीं कह सकता, ''मुझे बहुत दूर बात करनी है, मेरी एक कॉल बुक कर दें। मैं स्वर्ग में बिल से बात करना चाहता हूं। बिल तुम हो? अच्छा मैंने तुम्हें धन्यवाद कहने के लिए फोन किया था।''

जनाज़े के समय कई बार मैंने लोगों को मुर्दे के साथ बातें करते सुना है, ''मैं तुझ से बहुत प्यार करता हूं! तू मेरी जान है! मुझे छोड़कर मत जा!'' परन्तु तब ये सब बातें बेकार होती हैं।

टैक्सस के एक मनमौजी व्यवसायी ने अपने मित्रों और ग्राहकों को देने के लिए एक पुस्तक छपवाई। उसका नाम *कोटि-कोटि धन्यवाद* रखा गया! किताब के अन्दर ''धन्यवाद'' शब्द दस लाख बार छपा हुआ था। अधिकतर लोगों को दस लाख से भी अधिक बार ''धन्यवाद'' की आवश्यकता पड़ेगी, ताकि हम अपनी सहायता करने वालों का धन्यवाद कर सकें।

गैरलडाइन सियरफॉस के ''सेय सो'' शीर्षक के अंतर्गत लिखित पंक्तियों का अनुवाद इस प्रकार है:

आपके साथ चलते हुए
क्या कोई पड़ोसी कुछ सहायता करता है
जिससे आपका बोझ हल्का हो जाए?
तो फिर उससे कहते क्यों नहीं!
किसी पुराने मित्र के साथ अपना दु:ख बांटकर
उसका बाजू पकड़कर, दु:ख और कष्ट के गड्ढे से
बाहर आ सकते हो, तो उसे बताते क्यों नहीं!

क्या तुम्हारा स्वर्गीय पिता तुम्हें
यहां नीचे बहुत सी आशिषें देता है
तो फिर उसके सामने घुटने टेक कर
खुलकर, आनन्द से उसे बताते क्यों नहीं![13]

इस सब से हम अपनी परीक्षा के सबसे महत्वपूर्ण भाग पर आ जाते हैं: *क्या हम परमेश्वर का उतना धन्यवाद करते हैं, जितना हमें करना चाहिए।* परमेश्वर की सब आशिषों के लिए धन्यवाद न कह पाना, सबसे भयानक असफलता है। भजन लिखने वाले ने कहा था, ''हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह *और उसके किसी उपकार को न भूलना*'' (भजन संहिता 103:2)। भजन लिखने वाला किन ''उपकारों'' की बात कर रहा था? आइए मत्ती 5:45 में सुझाए गए कुछ उपकारों से आरम्भ करते हैं: ''वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है।'' हमें धूप और वर्षा; सूर्य और चन्द्रमा और तारे; फूल, वृक्ष और पक्षी; सेब, अण्डे और मक्खन मिलते हैं। हमें दिनचर्या की सब वस्तुएं मिलती हैं।

इसके अलावा उस सामरी पर किए यीशु के *विशेष* उपकार की तरह, हमारे ऊपर भी विशेष उपकार हुए हैं! ''सोचो कि उस ने तुम्हारे लिए कैसे बड़े-बड़े काम किए हैं'' (1 शमूएल

12:24)। आप कभी बीमार होकर अच्छे हुए हो ?[14] आपका पालन-पोषण मसीही परिवार में हुआ है ? आपको सुसमाचार को सुनने, समझने और मानने का अवसर मिला है ? आपने मसीही शिक्षा पाई है ? आपको ऐसा जीवन साथी मिला है, जो परमेश्वर से प्रेम करता है ? परमेश्वर ने आपको संतान दी है ? आपको परमेश्वर के महान संतों के बारे में जानने का अवसर मिला है ? किसी ने कहा है कि सबसे कठिन अंकगणित अपनी आशिषों को गिनने में दक्षता पाना है !

सबसे बढ़कर पहले हमें उस के लिए धन्यवादी होना चाहिए, जिसे पौलुस ने परमेश्वर का वह दान कहा है, ''जो वर्णन से बाहर है'' (2 कुरिन्थियों 9:15) यानी यीशु का दान ! दूसरे विश्व युद्ध के दौरान इंग्लैंड की रक्षा करने वाले रॉयल एयर फोर्स के युवकों को श्रद्धांजलि देते हुए विंस्टन चर्चिल ने कहा था: ''संसार के इतिहास में कभी इतने अधिक लोग, इतने कम लोगों के कर्ज़दार नहीं हुए हैं।''

हम, उस सबके लिए जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया, धन्यवाद करते हैं, तो उस धन्यवाद को कैसे दिखाते हैं ? प्रभु की मेज़ के पास इकट्ठे होने के समय ''वे नौ कहां हैं ?'' चंदे की थैली पास आने पर ''वे नौ कहां हैं ?'' रविवार की रात और बुधवार रात की प्रार्थना सभा में जब हम परमेश्वर की महिमा के लिए इकट्ठे होते हैं तो ''वे नौ कहां हैं ?'' किसी बीमार का हाल पूछने और सुसमाचार बताने के लिए जाने के समय, जिससे हम उससे बड़ी आशीष को अर्थात उद्धार की आशीष को दूसरों को बता सकें, ''वे नौ कहां हैं ?''

परमेश्वर ने जो कुछ हमारे लिए किया है, उस सब पर विचार करने के लिए कुछ समय लगाएं, फिर उसको धन्यवाद दें ! यह नहीं कि ''वे नौ कहां हैं ?'' पूछते हुए वे आपके लिए दुखी हों।

सारांश

अपने धन्यवाद को प्रकट करने का सबसे व्यावहारिक ढंग वह काम करना है, जिसकी आज्ञा आपको दी गई है। यदि आपने बपतिस्मा नहीं लिया या परमेश्वर की खोई हुई संतान हैं तो आप अपनी आवश्यकता के अनुसार क्यों नहीं करते ? यदि सचमुच उस सबके लिए, जो प्रभु ने आपके लिए किया है, धन्यवाद करना चाहते हैं तो आप प्रतीक्षा नहीं करेंगे यानी उसकी बात मानने में संकोच नहीं करेंगे।

टिप्पणियां

[1]लूका 9:51; 13:22. [2]लैव्यव्यवस्था 13:46; गिनती 5:2, 3. [3]यूहन्ना 4:9. [4]मेरे विचार से आज के समय से बाइबल के समय में ''कोढ़'' शब्द अधिक व्याप्त था। [5]ऐसी तुलना का इस्तेमाल करें जिसमें आपके सुनने वाले परिचित हों। [6]लैव्यव्यवस्था 14:2से। [7]एक प्राचीन हस्तलेख से संकेत मिलता है कि यीशु ने उन्हें उसी समय चंगा कर दिया, परन्तु अधिकतर हस्तलेखों में यह संकेत नहीं मिलता। यीशु के आश्चर्यकर्मों के इर्द-गिर्द की सब परिस्थितियों पर ध्यान देना दिलचस्प है। बर्टन कॉफमैन ने इस पर टिप्पणी करते हुए कि ''यीशु के आश्चर्यकर्मों में अद्‌भुत तरीके उसके ईश्वरीय होने का संकेत मिलता है'' अच्छा लिखा है, (कमैंटरी आन लूक [अबिलेन, टैक्सस: ए.सी.यू. प्रैस, 1975,] 340)। [8]आयत 19 में यीशु ने उस सामरी से कहा, ''तेरे *विश्वास* ने तुझे चंगा किया है।'' [9]सामरी लोग पुराने नियम की पहली पांच पुस्तकों को मानते थे, जिन में कोढ़ के विषय में नियम थे। [10]कॉफ़मैन, 341.

[11]NASB में यह टिप्पणी है: ''या, तुम्हें बचा लिया है।'' [12]एक पुरानी अभिव्यक्ति है, ''धन्यवाद करने से विश्वास सम्पूर्ण होता है।'' [13] *दि स्पीकर'स सोर्सबुक* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाऊस, 1962), 262 में एलिएनर डोन द्वारा दोहराया गया। [14]सुनने वालों को उन ''विशेष'' आशिषों का नाम बताने के लिए कहा जा सकता है, जो उन्हें मिली हैं। उन्हें मिलने वाली आशिषें इस पाठ में बताई गई आशिषों से भिन्न हो सकती हैं।